

अन्त्यारम्भ महाकाव्यको कृतिपरक अध्ययन

त्रिभुवन विश्वविद्यालय, मानविकी तथा सामाजिक शास्त्र

सङ्कायअन्तर्गत रत्नराज्यलक्ष्मी क्याम्पस, नेपाली

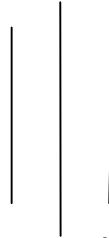
शिक्षणसमितिको स्नातकोत्तर तह दोस्रो

वर्षको दसौँ पत्रको प्रयोजनका लागि

प्रस्तुत



शोधपत्र



शोधार्थी

रामचन्द्र पौडेल

रत्नराज्यलक्ष्मी क्याम्पस

प्रदर्शनीमार्ग, काठमाडौँ

२०६८

अन्त्यारम्भ महाकाव्यको कृतिपरक अध्ययन

त्रिभुवन विश्वविद्यालय, मानविकी तथा सामाजिक शास्त्र

सङ्कायअन्तर्गत रत्नराज्यलक्ष्मी क्याम्पस, नेपाली

शिक्षणसमितिको स्नातकोत्तर तह दोस्रो

वर्षको दसौँ पत्रको प्रयोजनका लागि

प्रस्तुत



शोधपत्र



शोधार्थी

रामचन्द्र पौडेल

रत्नराज्यलक्ष्मी क्याम्पस

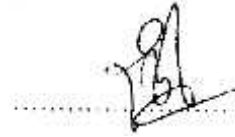
प्रदर्शनीमार्ग, काठमाडौँ

२०६८

शोधनिर्देशकको मन्तव्य

त्रिभुवन विश्वविद्यालय, मानविकी तथा सामाजिकशास्त्र सङ्कायअन्तर्गत रत्नराज्यलक्ष्मी क्याम्पसका छात्र रामचन्द्र पौडेलले स्नातकोत्तर तहको नेपाली विषयको दसौँ पत्रको प्रयोजनका लागि प्रस्तुत “अन्त्यारम्भ महाकाव्यको कृतिपरक अध्ययन” नामक शोधपत्र मेरा निर्देशनमा तयार पार्नु भएको हो । यस शोधकार्यबाट म सन्तुष्ट छु । म यस शोधपत्रको आवश्यक मूल्याङ्कनका लागि सिफारिस गर्दछु ।

मिति : २०६८/०५ /१९



रामप्रसाद ज्ञवाली
सहप्राध्यापक
नेपाली शिक्षण समिति
रत्नराज्यलक्ष्मी क्याम्पस
प्रदर्शनीमार्ग, काठमाडौँ ।

त्रिभुवन विश्वविद्यालय

रत्नराज्यलक्ष्मी क्याम्पस

पत्र संख्या :-

प्रदर्शनी मार्ग, काठमाडौं

मिति : २०६८/०५/

विषय :-

स्वीकृति पत्र

त्रिभुवन विश्वविद्यालय, मानविकी तथा सामाजिकशास्त्र सङ्कायअन्तर्गत रत्नराज्यलक्ष्मी क्याम्पस, नेपाली स्नातकोत्तर तह दोस्रो वर्षका छात्र रामचन्द्र पौडेलले तयार पार्नुभएको “अन्त्यारम्भ महाकाव्यको कृतिपरक अध्ययन” नामक प्रस्तुत शोधपत्र स्नातकोत्तर तहका दृष्टिले उपयुक्त देखिएकाले स्वीकृत गरिएको छ ।

.....

(रामप्रसाद ज्ञवाली)

शोधनिर्देशक

.....

(वासुदेव घिमिरे)

(बाह्य परीक्षक)

.....

(तुलसीमान श्रेष्ठ)

विभागीय प्रमुख

कृतज्ञताज्ञापन

प्रस्तुत शोधपत्र मैले आदरणीय गुरु सह-प्राध्यापक रामप्रसाद ज्ञवालीको कुशल निर्देशनमा रही तयार पारेको हुँ । रत्नराज्यलक्ष्मी क्याम्पस, स्नातकोत्तर तह, नेपाली शिक्षणसमितिको विभागीय प्रमुखका रूपमा कार्यरत रहेर आफ्नो अध्ययन, अध्यापन तथा अनुसन्धानमा हर्दम् व्यस्त रहँदासहै पनि उहाँले मलाई शीर्षक छनोटदेखि लिएर शोधपत्र तयार पारुन्जेलसम्म अमूल्य समय दिई पुऱ्याउनुभएको सहयोगप्रति कृतज्ञता ज्ञापन गर्ने मसँग शब्दहरू छैनन् । उहाँको कुशल मार्गनिर्देशन नपाएको भए आज शोधपत्रलाई यस रूपमा उतार्न सम्भव थिएन । मित्रवत् रूपमा हौसला र सुभावा-सल्लाह दिई समुचित निर्देशन प्रदान गर्नुभएकोमा श्रद्धेय निर्देशकज्युप्रति हार्दिक कृतज्ञता जाहेर गर्दछु ।

यस शोधपत्रको तयारी गर्ने सिलसिलामा आवश्यक सामग्री एवम् विभिन्न जानकारी दिएर सहयोग पुऱ्याउनुहुने शोधनायक डा.कृष्णप्रसाद भट्टराईप्रति हृदयदेखि नै आभार प्रकट गर्दछु । शोधप्रस्ताव लेखनका समयदेखि नै विभिन्न बौद्धिक सुभावा र प्रोत्साहन दिई अभिप्रेरित गराउनुहुने श्रद्धेय गुरुहरू डा.कुलप्रसाद कोइराला, श्री प्रमोदबर्द्धन कौडिन्यायनज्युप्रति पनि विनम्रतापूर्वक कृतज्ञता प्रकट गर्दछु ।

सामग्री सङ्कनका क्रममा आफूसँग रहेका सामग्रीहरू प्रदान गरी सहयोग पुऱ्याउनुहुने मेरा मित्र रामप्रसाद रिमालका साथै समय समयमा मेरो शोधकार्यप्रति रुचि लिएर घचघच्याइ रहने शुभेच्छुकहरू डा.जङ्गब चौहान, सुश्री एककुमाया पुन, श्री हेमराज काफ्ले, श्री निर्मलमणि अधिकारी, श्री काशीराज पाण्डे, श्री सुबोध कु.उपाध्याय, श्री खगेन्द्र आचार्य, श्री एकप्रसाद दुवाडी तथा श्री तीर्थ अधिकारीप्रति पनि सहृदयका साथ कृतज्ञता जाहेर गर्नु आफ्नो कर्तव्य ठान्दछु । त्यस्तै काठमाडौँ विश्वविद्यालय पुस्तकालयबाट पाएको सहयोग पनि मेरा लागि अविस्मरणीय छ । मलाई जन्म दिएर पालनपोषण गर्ने र शिक्षादीक्षा दिन सधैं तल्लीन रहनुहुने मेरा पिता-माता श्री ठाकुरनाथ पौडेल तथा मीनकुमारी पौडेल अनि सदैव हौसला प्रदान गर्ने भाइहरू गणेशप्रसाद पौडेल र हरेराम पौडेलप्रति कृतज्ञता अर्पण गर्दछु । मलाई पढाइ तथा हरेक कार्यहरूमा प्रोत्साहन र हौसला प्रदान गर्ने मेरी जीवनसङ्गिनी श्रीमती अम्बिका रिजाल (पौडेल) प्रति हार्दिक कृतज्ञता अर्पण गर्दछु । यस शोधपत्रलाई छिटोछरितो र शुद्धताका साथ टङ्कण गरी सहयोग गर्ने मेरा मित्र विजय चौधरीलाई हार्दिक धन्यवाद दिन चाहन्छु ।

अन्त्यमा म यस शोधपत्रको समुचित मूल्याङ्कनका लागि त्रिभुवन विश्वविद्यालय, मानविकी तथा सामाजिकशास्त्र
सङ्घायअन्तर्गत रत्नराज्यलक्ष्मी क्याम्पस, नेपाली शिक्षण समितिसमक्ष पेश गर्दछु ।

समूह: २०६६/२०६७
त्रि.वि.द.न. : ६-३-९९९-२४८४-२००२
परीक्षाकमाङ्क-४०००७५

.....
रामचन्द्रपौडेल
रत्नराज्यलक्ष्मी क्याम्पस
प्रदर्शनीमार्ग, काठमाडौं ।

विषयसूची

पृष्ठ नं

परिच्छेद एक

शोधपरिचय

१-४

| | |
|--------------------------|---|
| १.१ विषयपरिचय | १ |
| १.२ समस्याकथन | १ |
| १.३ शोधको उद्देश्य | २ |
| १.४ पूर्वकार्यको समीक्षा | २ |
| १.५ शोधको औचित्य र महत्व | ३ |
| १.६ अध्ययनको सीमाङ्कन | ४ |
| १.७ शोधविधि | ४ |
| १.८ शोधपत्रको रूपरेखा | ४ |

परिच्छेद दुई

| | |
|---|----|
| २.१ भट्टराईको जीवनी व्यक्तित्व र कृतित्व | ५ |
| २.१.१ जन्म र जन्मस्थान | ५ |
| २.१.२ बाल्यकाल | ५ |
| २.१.३ पारिवारिक जीवन | ५ |
| २.१.४ शिक्षादीक्षा | ६ |
| २.१.५ स्वभाव र रुचि | ६ |
| २.१.६ सेवा तथा संलग्नता | ७ |
| २.१.७ प्रेरणा र प्रभाव | ७ |
| २.१.८ भ्रमण | ७ |
| २.२ कृष्णप्रसाद भट्टराईको व्यक्तित्व | ८ |
| २.२.१ साहित्येतर व्यक्तित्व | ८ |
| २.२.१.१ जागिरे व्यक्तित्व | ८ |
| २.२.१.२ समाजसेवी व्यक्तित्व | ९ |
| २.२.१.३ सम्पादक व्यक्तित्व | ९ |
| २.२.१.४ पत्रकार व्यक्तित्व | ९ |
| २.२.१.५ साहित्यकार व्यक्तित्व | ९ |
| २.२.२.१ उपन्यासकार व्यक्तित्व | १० |
| २.२.२.२ कथाकार व्यक्तित्व | ११ |
| २.२.२.३ गीतकार व्यक्तित्व | ११ |
| २.२.२.४ कवि तथा महाकाव्यकार व्यक्तित्व | ११ |
| २.२.२.५ साहित्यिक आन्दोलनका अगुवा व्यक्तित्व | १२ |
| २.२.२.६ सम्मान तथा पुरस्कार | १३ |
| २.३ कृष्णप्रसाद भट्टराईका कृतित्व र प्रवृत्ति | १३ |
| २.३.१ स्वच्छन्दतावादी प्रवृत्ति | १४ |
| २.३.२ प्रकृति प्रयोग | १५ |
| २.३.३ लय विधान | १६ |
| २.३.४ सामाजिक सांस्कृतिक चेतन | १६ |
| २.३.५ दार्शनिकता | १७ |

| | |
|-------------------------------|----|
| २.३.६ मानवतावाद | १७ |
| २.३.७ दुःखान्तता वा कारुणिकता | १८ |
| २.३.८ राष्ट्रियता/देशभक्ति | १८ |
| २.३.९ प्रयोगधर्मिता | १९ |
| २.३.१० सन्देशमूलक प्रवृत्ति | २० |
| २.३.११ निष्कर्ष | २० |

परिच्छेद तीन महाकाव्यको सैद्धान्तिक स्वरूप

| | |
|---|-------|
| ३.१ विषयप्रवेश | २२ |
| ३.२ महाकाव्य शब्दको व्युत्पत्ति र अर्थ | २२ |
| ३.२.१ महाकाव्य सम्बन्धी परिभाषा | २३ |
| ३.२.२ महाकाव्य सम्बन्धी पूर्वीय परिभाषा | २४-२६ |
| ३.२.३ महाकाव्य सम्बन्धी पाश्चात्य परिभाषा | २६-३१ |
| ३.२.४ महाकाव्य सम्बन्धी अन्य परिभाषा | ३१-३४ |
| ३.३ महाकाव्यका तत्त्व | ३४ |
| ३.३.१ विषयप्रवेश | ३४ |
| ३.३.२ महाकाव्यका तत्त्व सम्बन्धी पूर्वीय मान्यता | ३४ |
| ३.३.३ महाकाव्यका तत्त्व सम्बन्धी पाश्चात्य मान्यता | ३४ |
| ३.३.४ महाकाव्यका तत्त्व सम्बन्धी भारतीय तथा नेपाली विद्वान्को मान्यता | ३४-३५ |
| ३.३.५ महाकाव्यका तत्त्वहरूको समीक्षा | ३६-४० |

परिच्छेद चार

अन्त्यारम्भ महाकाव्यको विश्लेषण

| | |
|--|-------|
| ४.१ रचना र प्रकाशन | ४१ |
| ४.२ संरचना | ४१ |
| ४.३ कथानक | ४१-४७ |
| ४.४ सर्ग योजनाका दृष्टिले अन्त्यारम्भ महाकाव्य | ४८-५२ |
| ४.५ पात्र र चरित्र चित्रण | ५३ |
| ४.६ ब्रह्म | ५३ |
| ४.७ प्रकृति | ५३ |
| ४.८ परिवेश | ५४ |
| ४.९ उद्देश्य | ५४ |
| ४.१० भाषा शैली | ५५ |
| ४.११ रस र भाव | ५६-५८ |
| ४.१२ अलङ्कार | ५९-६० |
| ४.१३ छन्द | ६० |
| ४.१४ विम्ब | ६१ |
| ४.१५ प्रतीक | ६१ |
| ४.१६ स्थिति गत्यात्मक साहित्यिक अभियानका दृष्टिले अन्त्यारम्भ महाकाव्य | ६२-६४ |

परिच्छेद पाँच
उपसंहार

६५-७१

सन्दर्भ ग्रन्थसूची

७२-७६

क. पुस्तक

ख. पत्रपत्रिका

ग. शोधग्रन्थ

परिशिष्ट खण्ड

क. कृष्णप्रसाद भट्टराईसँग लिइएको अन्तर्वार्ता

ख. भट्टराईको तस्वीर

सङ्क्षेपीकरण सूची

| | | |
|------------------|---|--------------------------------|
| अनुवा | — | अनुवादक |
| उदा | — | उदाहरण |
| क्र.सं. | — | क्रमसङ्ख्या |
| त्रि.वि. | — | त्रिभुवन विश्वविद्यालय |
| ते.सं. | — | तेस्रो संस्करण |
| CESDIM | — | Stato-dynamic Literay Movement |
| ने.रा.प्र.प्र. | — | नेपाल राजकीय प्रज्ञाप्रतिष्ठान |
| पृ. | — | पृष्ठ |
| मु.उ.नि. | — | मुण्डकोपनिषद् |
| रा.प्र.ज्ञ | — | रामप्रसाद ज्ञवाली |
| ऋ.पृ.सू. | — | ऋक् पृथ्वीसूक्त |
| वि.सं. | — | विक्रम संवत् |
| श्रीमद्.भ.गी. | — | श्रीमद्भगवद् गीता |
| श्रीमद्.भा.म.पु. | — | श्रीमद्भागवत् महापुराण |
| सम्पा. | — | सम्पादक |
| सा.प्र. | — | साभ्ना प्रकाशन |